कक्षा-10 संस्कृत 28 फरवरी

अंतिम आघात M. IMP. पद्यांश

संस्कृत श्लोक +सूक्तियां

LIVE

चल रहा है...

महामैराथन

- श्लोको का हिंदी अर्थ
- सूक्तियों की व्याख्या
- संस्कृत अर्थ लिखने का तरीका

ततो धनञ्जयं द्रोणं स्मयमानोऽभ्यभाषत।
त्वयेदानीं प्रहर्तव्यमेतल्लक्ष्यं विलोक्यताम्॥

सन्दर्भ-प्रस्तुत श्लोक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' पाठ्य-पुस्तक के 'लक्ष्य-वेध-परीक्षा' नामक पाठ से अवतरित है।

व्याख्या- जब अन्य कोई भी शिष्य सही निशाना न लगा सका तब द्रोणाचार्य ने मुस्कराते हुए अर्जुन से कहा-'अब तुम्हें प्रहार करना है, इसलिए लक्ष्य ठीक से देख लो।'

एवमुक्तः सव्यसाची मण्डलीकृतकार्मुकः।
तस्थौ भासं समुद्दिश्य गुरुवाक्यप्रणोदितः।।

व्याख्या- इस प्रकार गुरु द्रोणाचार्य की आज्ञा पाकर उनके वचनों से प्रेरित अर्जुन धनुष चढ़ाता हुआ गीध को निशाना बनाकर खड़ा हो गया। द्रोणाचार्य ने कहा कि हे अर्जुन ! क्या तुम इस वृक्ष पर स्थित गीध को, वृक्ष को तथा मुझको भी देख रहे हो।

पश्याम्येकं भासमिति द्रोणं पार्थोऽभ्यभाषत।

न तु वृक्षं भवन्तं वा पश्यामीति च भारत ।।

व्याख्या-भारतवंशी अर्जुन ने 'मैं केवल गीध को देख रहा हूँ, मैं न तो वृक्ष को अथवा न आपको देख रहा हूँ', ऐसा द्रोण से कहा।

भासं पश्यसि यद्येनं तथा ब्रूहि पुनर्वचः।

<u>शिरः पश्यामि भासस्य न गात्रमिति सोऽब्रवीत्।</u>

व्याख्या- 'यदि (तुम) इस गीध को देख रहे हो तो वैसे वचन पुनः कहो'। 'मैं भास के सिर को देख रहा हूँ, शरीर को नहीं' ऐसा उस (अर्जुन) ने कहा।

मुहूर्त्तादिव तं द्रोणस्तथैव समभाषत।
पश्यस्येनं स्थितं भासं दुमं मामपि चार्जुन।।

व्याख्या- अर्जुन धनुष पर बाण चढ़ाकर खड़ा हो गया। लगभग मुहूर्त भर के बाद (थोड़ी देर बाद) द्रोणाचार्य जी ने उसको भी उसी प्रकार कहा हे अर्जुन ! इस गीध को, वृक्ष को और मुझे भी देख रहे हो।

Gyansindhu Coaching Classes

शीघ्रं भवन्तः सर्वेऽपि धनूंष्यादाय सत्वराः।
भासमेतं समुद्दिश्य तिष्ठध्वं सन्धितेषवः।।

व्याख्या- द्रोणाचार्य ने कहा-आप सभी लोग धनुष लेकर आयें और गीध को लक्ष्य करके धनुष में बाण लगाकर जल्दी से खड़े हो जायें।

भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती।

तस्माद्धि काव्यं मधुरं तस्मादपि सुभाषितम्।।

सन्दर्भ प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत-पद्य-पीयूषम्' में संकलित 'सूक्ति-सुधा' शीर्षक से अवतरित है। इसमें संस्कृत भाषा की विशेषता बतायी गयी है।

व्याख्या-भाषाओं में देवताओं की वाणी संस्कृत प्रमुख, मधुर गुण से युक्त और अलौकिक है। इसलिए उसका काव्य मधुर है। उससे भी मधुर सुन्दर वचन हैं।

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।
मूढ़ैः पाषाण-खण्डेषु रत्न-संज्ञा विधीयते ॥

व्याख्या-पृथ्वी में जल, अन्न और सुन्दर वचन- ये तीन रत्न (श्रेष्ठ पदार्थ) हैं, मूर्ख लोगों ने पत्थर के टुकड़ों में रत्न का नाम कर दिया है।

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।

व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा।।

व्याख्या-बुद्धिमानों का समय काव्य और शास्त्रों के अध्ययन द्वारा मनोरंजन (आनन्द) से बीतता है। मूर्खों का समय निन्दित कार्यों के करने से, सोने से अथवा झगड़ने से बीतता है।

श्लोकस्तु श्लोकतां याति यत्र तिष्ठन्ति साधवः।
लकारो लुप्यते तत्र यत्र तिष्ठन्त्यसाधवः ।।

व्याख्या-जहाँ सज्जन पुरुष रहते हैं, वहाँ श्लोक (संस्कृत का छन्द) कीर्ति की प्राप्ति करता है। जहाँ दुर्जन लोग रहते हैं, वहाँ श्लोक का 'ल' लुप्त हो जाता है अर्थात् श्लोक शोक की प्राप्ति कराता है।

अप्राप्तकालं वचनं बृहस्पतिरपिब्रुवन।

प्राप्नुयाद् बुद्धयवज्ञानमपमानञ्च शाश्वतम् ॥

व्याख्या-मनुष्य को समय के अनुसार ही बात करनी चाहिए। कवि कहता है कि अवसर के प्रतिकूल बोलने वाला चाहे देवगुरु बृहस्पति भी क्यों न हों वह अपनी बुद्धि की अवहेलना तथा अपमान प्राप्त करता है। मनुष्य को अवसर के अनुकूल ही बात करना चाहिए।

केयूराः न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वलाः।
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्द्धजाः ।।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते।
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणम् भूषणम्।।

व्याख्या- कवि कहता है कि भुजाओं पर पहने जाने वाले बाजूबंध, चन्द्रमा के समान उज्ज्वल हार, स्नान, उबटन तथा पुष्पों से सजाये गये बाल पुरुष की शोभा नहीं करते। इनसे जीवनपर्यन्त रहनेवाली शोभा नहीं रहती। सुसंस्कृत वाणी जो धारण कर लेता है वही श्रेष्ठ होता है। वाणीरूपी आभूषण ही निरन्तर रहने वाला आभूषण है।

लक्ष्मीर्न या याचकदुःखहारिणी विद्या न याऽप्यच्युतभक्तिकारिणी।
पुत्रो न यः पण्डितमण्डलाग्रणीः सा नैव सा नैव सा नैव।

व्याख्या - जो लक्ष्मी याचकों के दुःख को दूर करने वाली नहीं, जो विद्या भगवान् विष्णु की भक्ति प्रदान करनेवाली नहीं, जो पुत्र विद्वान पुरुषों की मण्डली में अग्रगण्य नहीं, न तो वह लक्ष्मी ही है, न वह विद्या ही है और न वह पुत्र ही है।

यो दुर्लभतरं प्राप्य मानुषं द्विषते नरः ।
धर्मावमन्ता कामात्मा भवेत् स खलु वञ्चते ।

सन्दर्भ प्रस्तुत श्लोक व्यास-रचित महाभारत से संगृहीत हमारी पाठ्य-पुस्तक "संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'क्षान्ति-सौख्यम्' नामक पाठ से उद्धृत किया गया है। इस श्लोक में महाभारत के युद्ध में शरशय्या पर लेटे हुए भीष्म पितामह युधिष्ठिर को उपदेश देते हुए कहते हैं कि क्षमा मनुष्य का सर्वोत्तम गुण है।

व्याख्या-जो मनुष्य अन्य जन्मों की अपेक्षा अधिक दुर्लभ मनुष्य क़ा जन्म पाकर (दूसरों से) द्वेष करता है वह धर्म का अनादर करनेवाला, कामनाओं में आसक्त रहनेवाला होता है, वह अपने से ही धोखा करता है।

सर्वे क्षयान्तः निचयाः पतनान्ताः समुच्छ्याः ।

संयोगाः विप्रयोगान्ताः मरणान्तं हि जीवितम् ।।

व्याख्या-सभी संग्रह-विनाश के लिए: उत्थान-पतन के लिए: मिलन, वियोग के लिए; (और) जीवन-मरण के लिए होते हैं।

दमः क्षमा धृतिस्तेजः सन्तोषः सत्यवादिता।

ह्रीरहिंसाऽव्यसनिता दाक्ष्यं चेति सुखावहाः ।।

व्याख्या - इन्द्रिय निग्रह, क्षमा करना, धैर्य रखना, तेजस्वी होना, सन्तोष, सत्य बोलना, लज्जा करना, अहिंसा, दुर्व्यसनों से दूर रहना और कार्य को कुशलतापूर्वक करना, ये सब सुखदायी गुण हैं।

अभयं यस्य भूर्तभ्यो भूतानामभयं यतः।
तस्य देहाद् विमुक्तस्य भयं नास्ति कुतश्चन।

व्याख्या भीष्म पितामह युधिष्ठिर से कहते हैं कि जिस मनुष्य की सब प्राणियों को निर्भयता प्राप्त है अर्थात् जिससे किसी को भय नहीं तथा जिसे सब प्राणियों से निर्भयता है, ऐसे मनुष्य को शरीर से मुक्त हो जाने पर अर्थात् शरीर त्याग (मृत्यु) के बाद किसी से कहीं से भी भय नहीं रहता।

सान्त्वेनान्नप्रदानेन प्रियवादेन चाप्युत।
समदुःखसुखो भूत्वा से परत्र महीयते।

व्याख्या (जो मनुष्य) दूसरों को सान्त्वना देता है, अन्न दान कर या प्रियवचन बोलकर सन्तुष्ट करता है, वह मनुष्य सुख-दुःख को समान माननेवाला होता है और (इस संसार से जाने के बाद) परलोक में भी प्रतिष्ठा पाता है।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात्सत्यमप्रियम् ।
प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः ।।

सन्दर्भ प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'विद्यार्थिचर्या' नामक पाठ से उद्धृत है।

व्याख्या- सत्य बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए, अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए, प्रिय झूठ भी नहीं बोलना चाहिए। यह सनातन धर्म है।

सर्वलक्षणहीनोऽपि, यः सदाचारवान्नरः ।
श्रद्दधानोऽनसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति ।।

व्याख्या-सम्पूर्ण शुभ लक्षणों के न होने पर भी जो पुरुष सदाचारी, श्रद्धालु तथा ईर्ष्या न करने वाला है वह सौ वर्ष तक जीवित रहता है।

सर्व परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्।

एतद्विद्यात् समासेन लक्षणं सुख-दुःखयोः ॥

व्याख्या- पराधीन रहना सभी प्रकार से दुःख है तथा स्वाधीन रहना सभी प्रकार से सुख है। संक्षेप में मुख-दुःख के यही लक्षण जानने चाहिए।

एकाकी चिन्तयेन्नित्यं, विविक्ते हिमात्मनः।

एकाकी चिन्तयानो हि, परं श्रेयोऽधिगच्छति ॥

व्याख्या- सदा एकान्त में अकेले अपना हित सोचना चाहिए। अकेला हित सोचने वाला बहुत अधिक कल्याण प्राप्त करता है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि

सन्दर्भ-प्रस्तुत श्लोक महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित श्रीमद्भागवद् गीता से संग्रहीत है। गीता में महाभारत के सात सौ श्लोकों का संकलन है। यह श्लोक इसी ग्रन्थ से हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' में 'गीतामृतम्' शीर्षक पाठ से संकलित है।

प्रस्तुत श्लोक में वासुदेव श्रीकृष्ण अर्जुन को निष्काम कर्म करने का उपदेश देते हैं।

व्याख्या-तुम्हारा कर्म करने में अधिकार (कर्तव्य) है, फल में कभी नहीं। कर्मफल के निमित्त न बनो। तुम्हारा कर्म न करने में आसक्ति (लगाव) न हो। भाव यह कि निष्काम कर्म करना तुम्हारा कर्त्तव्य है।

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥

व्याख्या-हे धनंजय! (अर्जुन) आसक्ति को त्यागकर, सिद्धि और असिद्धि में समान बुद्धि वाला होकर योग में स्थित हुआ कर्मों को कर। यह समत्व भाव ही योग नाम से कहा जाना है।

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्धयेदकर्मणः।।

व्याख्या-तू शास्त्र-विधि से नियत किये हुए कर्म को कर, क्योंकि कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करना श्रेष्ठ है और कर्म न करने से तेरी शरीर-यात्रा भी सिद्ध (सफल) नहीं होगी।

श्रद्धावांल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिचिरेणाधिगच्छति ।

व्याख्या- हे अर्जुन! जितेन्द्रिय, साधना में तत्पर हुआ श्रद्धावान् पुरुष ज्ञान को प्राप्त होता है। ज्ञान को प्राप्त होकर भगवत्प्राप्ति रूप परम शान्ति को प्राप्त हो जाता है।

अज्ञश्चाश्रद्धानश्च संशयात्मा विनश्यति।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ॥

व्याख्या-ज्ञानहीन, श्रद्धा न रखनेवाला और संशय से युक्त मनवाला पुरुष नष्ट हो जाता है। संशय में पड़े हुए मनुष्य का न यह लोक हैं, न परलोक में सुख है।

यो न हुष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति ।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः ॥

व्याख्या- जो पुरुष न प्रसन्न होता है, न द्वेष करता है, न शोक करता है, न इच्छा करता है, शुभ और अशुभ पदार्थों का त्याग करनेवाला और जो भक्तियुक्त है, वह मुझे प्रिय है।

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ।।

व्याख्या- जो मनुष्य शत्रु और मित्र के प्रति समान है, जो मान और अपमान में समान रहता हैं, गर्मी-सर्दी और सुख-दुःख में जो समान है तथा आसक्ति से रहित है, वह मुझे प्रिय है।

तुल्यनिन्दास्तुतिमौनी संतुष्टो येन केनचित् ।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ।।

व्याख्या-निन्दा और प्रशंसा में समान रहने वाला, मौन रहनेवाला, जिस किसी से भी प्रसन्न रहनेवाला, गृहहीन (ममतारहित), स्थिर बुद्धि एवं भक्तिवाला मनुष्य मेरा प्रिय है।

❑ संस्कृत अर्थ लिखने का तरीका

संस्कृतार्थः- अस्मिन श्लोके कवि कथयति यत्.....श्लोक का अपने शब्दों में संस्कृत अनुवाद.....

ज्ञानसिन्धु कोचिंग क्लासेज
अनुशासनेन विद्या
अभ्यासेन विद्या
ज्ञानात्
मुक्तिः
* ।। ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम् ।। *